मत

Dr. Komal Patel

- व्युत्पत्ति

मन्यते ज्ञायते अनेन इति मनः । (श.क.द्रू)

ज्ञान का होना अथवा नहीं होना ही मन के अस्तित्व का लक्षण हैं ।

- पर्याय

चेतस, चेत, मानस, ह्रत

- स्थान

1) शिरस्ताल्वन्तरगतं सर्वेन्द्रियं परं मनः । (भेल चि. 8/2)

2) ह्रदय (च. सू. 30/4)

Properties

अणुत्वमथ चैकत्वं द्वौ गुणौ मनसः स्मृतौ ।।

(च. शा. 1/18)

मन एक है तथा सूक्ष्म परिमाण वाला होता है। इसकी गति अतितीव्र होती है। सूक्ष्म परिमाण होने से इसकी गति में कहीं अवरोध नहीं होता, तीव्रगति होने से एक ही समय में सभी इन्द्रियों के साथ संयुक्त हो जाता है तथा एक होने से आत्मा को इसके द्वारा होने वाले ज्ञान में परस्पर टकराव नहीं होता है। इन्द्रियों के विषय नियत हैं, परन्तु मन सभी इन्द्रियों के साथ सबके विषयों को ग्रहण करता है। इसी से उसे 'अतीन्द्रिय' कहा जाता है।

सुखाद्युपलब्धि साधनमिन्द्रियं मनः ।।

(तर्क संग्रह)

Functions

इंद्रियाभिग्रहः कर्म मनसः स्वस्य निग्रहः ।
उहो विचारश्च ततः परं बुद्धि प्रवर्तते ।।

(च. शा. 1/21)

इन्द्रियोंके अधिष्ठानोंमें जाकर विषयोंका ग्रहण करना, अनिष्ट विषयोंमें प्रवृत्त होनेपर अपना स्वयं निग्रह, तर्क, विचार तथा गुण-दोष विवेचन (संकल्प) ये मनके कर्म हैं।

Objects (विषय)

चिंत्य विचार्यमूह्य च ध्येयं संकल्प्यमेव च ।

उहो विचारश्च, ततः परं बुद्धि प्रवर्तते ।।

(च. शा. 1/20)

ज्ञानेन्द्रियोंकी सहायताके विना केवल मनसे जिनका ज्ञान होता है, वे मनके विषय है । अर्थात्-- जो कुछ चिन्ता, विचार, तर्क, ध्यान तथा संकल्पके योग्य विषय तथा सुख वा दुःख प्रभृति हैं, वे सब मनके ग्राह्य विषय हैं ।

लक्षणं मनसो ज्ञानस्याभावो भाव एव च।
सति ह्यात्मेन्द्रियार्थानां सन्निकर्षे न वर्तते॥
वैकृत्यान्मनसो ज्ञानं सान्निध्यात्तच्च वर्तते।

(च० शा० अ० १)

ज्ञान का न होना अथवा होना ही मन का लक्षण है। आत्मा, इन्द्रिय और इन्द्रियार्थ का सन्निकर्ष होने पर जिसके उपस्थित रहने से ज्ञान होता है, वह मन कहलाता है।

THANK YOU